JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजनीतिक भूगोल में एतिहासिक दृष्टिकोण का महत्व : राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के सन्दर्भ में।

डा0 नेत्रपाल सिंह

सारांश :– प्रस्तुत शोध पत्र में राजनतिक भूगोल विषय के प्रस्तुतीकरण में विभिन्न विचारकों का योगदान जिसमें कान्ट तथा कार्लसन की परिभाषाओं सहित स्पष्ट किया गया है। तथा भूगोल वेत्ता विगर्ट की पुस्तक ' प्रिंसीपल ऑफ पॉलिटीकल ज्यॉग्राफी' में राजनीतिक भूगोल की परिभाषा तथा राजनीतिक भूगोल अध्ययन सम्बन्धी दृष्टिकोणों– शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण, एतिहासिक दृष्टिकोण, संरचना ससम्बन्धित दृष्टिकोण, कार्य सम्बन्धित दृष्टिकोण ,क्षेत्र एकरूपता सिद्धान्त तथा तन्त्र उपगमन दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए एतिहासिक दृष्टिकोण को प्रमुखता से विश्लेषित किया है। जिसके समर्थक विचारक हार्टशॉर्न, जॉन्स, हिटिलेशी आदि विचारकों के विचारों को विश्लेषित किया है। शोध पत्र में एतिहासिक दृष्टिकोण के सबन्ध में प्रसिद्ध पुस्तक 'दि अर्थ एण्ड स्टेट' में वैचारिक प्रस्तुतीकरण जिसके पृथ्वी एवं राज्यों के सम्बन्ध को प्रभावित करने वाले विचारों को उद्धृत किया गया है। तत्पश्चात राजनीतिक भूगोल के विकास में अग्रणी विचारकों की पंक्ति में विचारकों को स्थानबद्ध किया गया है। राजनीतिक भूगोल में विकास में सत्रहवीं शताब्दी का महत्व तथा सत्रहवीं शताब्दी के मध्य विलियम पेटी द्वारा राजनीतिक भूगोल का एतिहासिक विवरण भौगोलिक पक्ष, क्षेत्र तथा राजधानी को नियंत्रण प्रदान करने वाले तत्वों का यथा विश्लेषण किया गया है। अठारहवीं शताब्दी के विचारक इमेनुअल कान्ट का कोनिंगवर्ग विश्व विद्यालय का व्याख्यान के उपरान्त जर्मन विचारकों की राजनीतिक भूगोल में रूचि जागृत होना तथा उनके शिष्य फ्रेडरिच, हेनरिच, हम्बोल्ट, कार्ल रिटर तथा फ्रेडरिच रेजटेल का यथा उल्लेख है। जिन्होनें राजनीतिक भूगोल के विषय मे महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। लेख अन्तर्गत उन्नींसबीं सदी के विचाकर रेजटेल की पुस्तक 'पॉलिटीकल जियोग्रॉफी' के क्रमबद्ध अध्ययन की आधार शिला का रखा जाना लेख में शोधार्थी द्वारा उल्लखित किया गया है।साथ ही बीसबीं सदी में राजनीतिक भूगोल विषय का वास्तविक विकास जिसे जियो पॉलिटिकल के स्वरूप में प्रस्तुत किया गया । बीसबीं शताब्दी में रूडोल्फ केजेलेन द्वारा सर्वप्रथम भू–राजनीतिक शब्द का प्रयोग तथा कार्ल हॉशोफर द्वारा प्रमाणिक आधार प्रस्तुत किया जाना लेख को मौलिकता प्रदान करता है।

प्रस्तावना :– सामान्यतया राजनीतिक भूगोल का क्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है। प्राचीन मान्यताएं अर्थात् भूगोल सम्बन्धी विश्लेषण सीमित क्षेत्र का संकेतक हैं। जबकि भूगोल विविध दिशाओं एवं वातावरण के साथ मानवीय संम्बन्धों एवं पृथ्वी तल पर वातावरण विविधता के कारणों एवं विविध क्षेत्रीय असमानताओं को स्पष्ट करता है। अतः उसके अध्ययन हेतु विभिन्न विचारकों ने विभिन्न परिभाषाओं के माध्यम से भूगोल की एक शाखा राजनीतिक भूगोल के अन्तर्गत विषय सामग्री को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। प्रस्तावित शोघ पत्र अन्तर्गत राजनीतिक भूगोल के विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र तथा विभिन्न अध्ययन दृष्टिकोणों को भी परिभाषित करते हुए ऐतिहासिक दृष्टिकोण को अध्ययन में सविस्तार विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। ताकि शीर्षक अनुरूप एवं विविध अध्ययन दृष्टिकोणों में ऐतिहासिक दृष्टिकोण को के महत्व एवं उपयोगिता को समुचित रूप से स्पष्ट किया जा सके।

राजनीतिक भूगोल राजनीतिक :– राजनीतिक भूगोल पर प्राचीन काल से विभिन्न विचारकों द्वारा विचार प्रस्तुत किये गये, किन्तु कॉन्ट ने 1756 ई. में राजनीतिक भूगोल की विभिन्न इकाइयों एवं प्राकृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात अन्तर्राष्ट्रीय जगत में जर्मन भूगोल वेत्ताओं , अमेरिकन भूगोल वेत्ताओं तथा ब्रिटेन के भूगोल वेत्ताओं द्वारा राजनीतिक भूगोल की विषय सामग्री को स्पष्ट किया गया। कार्लसन ने राजनीतिक भूगोल को स्पष्ट करते हुए लिखा है। कि '' राजनीतिक भूगोल राज्य के अर्न्तसम्बन्ध तथा पृथ्वी का अध्ययन करता है।[1] अतः स्पष्ट है कि राजनीतिक भूगोल राज्यों में भौगोलिक संबंधों को स्पष्ट करता है।

विगर्ट ने अपनी पुस्तक ' प्रिंसिपल ऑफ पॉलिटिकल ज्योग्राफी' में राजनीतिक भूगोल को परिभाषित करते हुए लिखा है कि राजनीतिक भूगोल उन आंतरिक भौगोलिक तथ्यों की व्याख्या एवं अध्ययन रता है जो राज्य को विशिष्टता प्रदान करते हुए, राज्यों के मध्य सम्बन्धों को स्थापित करते हैं।[2]

एस. बी. कोहेने के अध्ययन में सम्पूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम समाहित होने के साथ भौगोलिक पर्यावरण जो उन्हें निरंतर परिचालित करने के लिए उचित पर्यावरण प्रदान करता है। उनकी परिभाषा में राजनीतिक भूगोल वह शाखा है, जो राजनीतिक उपक्रमों को भौगोलिक परिवेश में प्रस्तुत करती है। विभिन्न स्थानों पर राजनीतिक उपक्रमों की भिन्नता, राजनीतिक भूगोल की मूल भावना है।[3]

राजनीतिक भूगोल सम्बन्धी दृष्टिकोण :– राजनीतिक भूगोल के विकास क्रम से यह स्पष्ट होता है कि अनेकानेक विचारकों भूगोल वेत्ताओं ने अपने विचारों द्वारा इसको गति प्रदान की तथा इसको विशिष्ट विषय के रूप में विकसित किया। यद्यपि आधुनिक राजनीतिक भूगोल का वास्तविक प्रारंभ 19 वीं शताब्दी में हुआ, किन्तु इसमें सैद्धान्तिक निरूपण का लगभग अभाव रहा। यही कारण है कि प्रो. ए.ई. मुडी ने इसके सम्बन्ध में लिखा है – '' राजनीतिक भूगोल कभी निश्चित विज्ञान नहीं हो सकता था इसकी समस्याओं के समाधान को शुद्ध विज्ञान के समान ग्रहणशील मानना एक भूल होगी।''

सैद्धान्तिक निरूपण के अभाव के कारण अनेक भूगोलवेत्ताओं ने चिंता व्यक्त की एवं इसके लिए अनेक दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये, जिनको आधार मानकर राजनीतिक भूगोल का विधिवत अध्ययन किया जा सकता है। सामान्यतया राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के छः निम्नलिखित दृष्टिकोण अपनाये गये जिनके अन्तर्गत राजनीतिक भूगोल का अध्ययन किया जाता है–

1. शक्ति विश्लेषण दृष्टिकोण (Power Analysis Approach)
2. एतिहासिक दृष्टिकोण (Historical Approach)
3. संरचना संबंधित दृष्टिकोण (Morphological Approacah)
4. कार्य संबंधित दृष्टिकोण (Functional Approach)
5. क्षेत्र एकरूपता का सिद्धान्त (Unified Field Theory)
6. तंत्र उपगमन दृष्टिकोण (System Approach)

राजनीतिक भूगोल के उपरोक्त दृष्टिकोणों में एतिहासिक दृष्टिकोण राजनीतिक भूगोल को विश्लेषित करने में सक्षम तथा अधिक उपयुक्त है। अतः अध्ययन अनुरूप एतिहासिक दृष्टिकोण का विस्तृत विवेचन समीचीन होगा। ताकि राजनीतिक भूगोल में एतिहासिक दृष्टिकोण के महत्व को स्पष्ट किया जा सके।

एतिहासिक दृष्टिकोण :–

राजनीतिक भूगोल में ऐतिहासिक परिवेश का अध्ययन अपना विशेष महत्व रखता है। इसकी उपयोगिता हार्टशॉर्न, जॉन्स, हिटेलेसी आदि विचारकों ने स्वीकार की है। इसका प्रमुख उद्देश्य भूतकाल की घटनाओं का अध्ययन करके न केवल प्राचीन परिस्थितियों से अवगत कराया होता है, अपितु वर्तमान समस्याओं के समाधान का मार्ग भी प्रशस्त होता है। धरातल एक राज्य का केन्द्रीय स्थल है जिसके क्रमिक विकास, सीमांत प्रदेशों पर आक्रमण, उपनिवेश का विस्तार आदि अनेक समस्याओं को ऐतिहासिक विवेचन से ही समझा जा सकता है। हिटेलिसी ने फ्रांस का विवरण अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'दि अर्थ एंड स्टेट' में प्रस्तुत किया है। इसमें उन्होंने फ्रांस के उद्भव एवं विकास का वर्णन करने हेतु उसके सफलता पूर्वक मानचित्र पर प्रदर्शित भी किया है।साथ ही उन्होंने उन सभी तत्वों का विशद विवेचन प्रस्तुत किया जो पृथ्वी और राज्यों के संबंधों को प्रभावित करते हैं।

यद्यपि ऐतिहासिकता का अध्ययन राजनीतिक भूगोल में महत्व रखता है, किन्तु इसके विस्तार में खों जाना युक्ति संगत नहीं है। सामान्यतया ऐतिहासिकता में भूतकाल को प्राथमिकता देकर वर्तमान में अति महत्व दिया जाता है। जिससे समस्याओं के स्थान पर जटिलता आ जाती है।

शोधार्थी द्वारा राजनीतिक भूगोल के एतिहासिक विकास पर दृष्टिपात करना उचित होगा।

राजनीतिक भूगोल का ऐतिहासिक आधार पर विकास–

राजनीतिक भूगोल के विकास के नवीन दृष्टिकोण व उनकी विषय वस्तु भिन्न रही किन्तु समयानुकूल राजनीतिक भूगोल के विकास को समझना शोधार्थियों और विद्यार्थियों हेतु अत्यन्त लाभप्रद होगा। अतः राजनीतिक भूगोल के विकास की प्रक्रिया को संक्षेप में समझाना अति आवश्यक होगा।

राजनीतिक भूगोल के प्रारम्भिक प्रवर्तकों और प्राचीन विद्वानों द्वारा बहुमुखी विचार रखे गये। जिनका सम्बन्ध विभिन्न विषयों से रहा। जिसमें बी.एल सुखववाल का नाम प्रमुख हैं।[4] उसी क्रम में हिप्पोक्रेटस, प्लेटों तथा अरस्तु के नामों को उल्लेख अग्रणी पंक्ति के विचारकों में किया जा सकता है। हालांकि तात्कालिक समय में राजनीतिक भूगोल का विकास नहीं हो पाया था। इसका प्रारम्भ सत्रहवीं शदी से माना जाता है।

सत्रहवीं शदी मे मध्य विलियम पेटी ने कहा कि भूगोल राजनीति को प्रभावित करने का प्रभावी कारक है। उनके शोधकार्यों में 'Olitical arrithmatic, Hiberniae, Delinetio, Political Anatomy of Ireland, Essay in Political Arithmatic , के अन्तर्गत उन्होंने राजनीति के भौगोलिक पक्ष जैसे – राज्य का भौगोलिक प्रभावी क्षेत्र, राज्य की राजधानी को नियन्त्रण प्रदान करने वाले तत्व, आदि का विवेचन प्रस्तुत किया।[5]

अठारहवीं शताब्दी में इमेनुअल कांट वर्तमान राजनीतिक भूगोल के प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने कोनिंगबर्ग वि0 वि0 में अपने व्याख्यान में भूगोल की अनेकों शाखाओं के साथ राजनीतिक भूगोल को भी मजबूती से उल्लेख किया। उनके विचारों से प्रभावित जर्मन भूगोल वेत्ताओं ने राजनीतिक भूगोल के विषय में सोचना आरम्भ किया। उनके प्रमुख शिष्य फ्रेडरिच, हेनरिच, हम्बोल्ट, कार्ल रिटर, फ्रेडरिच रेटजेल ने राजनीतिक भूगोल के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान दिया।6

उन्नीसवीं शदी में रेटजेल की पुस्तक ''Politische Geography, के अन्तर्गत राजनीतिक भूगोल का क्रमबद्ध अध्ययन प्रस्तु किया गया । वास्तविकता यह है कि रेटजेल द्वारा राजनीतिक भूगोल की आधार शिला रखी गयी। जो पश्चात्वर्ती भूगोल वेत्ताओं हेतु मार्गदर्शक साबित हुई। उन्हीं के विचारों को आधार मानकर जर्मनी में भू–राजनीति का विचार प्रस्तुत किया गया। हालांकि यह विचार स्वार्थपूर्ण राजनीति का परि.चायक है। जिसे अर्थात् रेजटेल के विचारों का संक्षिप्तीकरण करते हुए प्रस्तुत किया गया।

राजनीतिक भूगोल की विकास यात्रा में बीसबीं सदी का उल्लेख अत्यन्त आवश्यक है। जहां से राजनीतिक भूगोल का वास्तविक विकास माना जा सकता है। इसके प्रारंभिक विकास हेतु जर्मनी के भूगोल वेत्ताओं ने जियोपॉलिटीकल अर्थात् भू–राजनीति नाम से राजनीतिक भूगोल को राज्य विस्तार एवं युद्ध प्रवर्तक के स्वरूप में प्रस्तुत किया गया। रूडोल्फ केजेलेन द्वारा सर्वप्रथम ' भू–राजनीति शब्द का आविष्कार किया गया। तथा इसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण विश्लेषण कार्ल हॉशोफर द्वारा प्रस्तुत किया गया।

विश्व शक्ति विश्लेषण एवं सामरिक के आधार पर भूगोलवेत्ताओं ने अल्फ्रेड थायेर महान, मैकेण्डर, स्पाइकमेन तथा ऐलेक्जेण्डर–डी–सेवरस्की आदि द्वारा प्रस्तुत किया गया।[7]

आधुनिक शताब्दियों में राजनीतिक भूगोल के विविध पक्षों का विकास अनवरत जारी है। राज्य तथा उसके द्वारा प्रशासन, निर्वाचन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों तथा राजनीतिक घटनाक्रमों आदि का अध्ययन भूगोलवेत्ता प्रमुख रूप से कर रहे हैं। आधुनिक समय में जिन भूगोल वेत्ताओं द्वारा राजनीतिक भूगोल के विविध पक्षों का अध्ययन किया गया उनका नाम उल्लेखनीय है जिसमें हार्टशोर्न, ह्विटलेशी, स्टेफन जोंन्स, जीन गॉटमेन, नॉरमन पोण्ड्स, ओ.एच. के. स्पेट, जे.आर.वी.प्रेस्कॉट, ए.ई. मूडी आदि।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक भूगोल का कई सदियों में क्रमशः अनवरत विकास हुआ। वर्तमान समय में अनेक ग्रन्थ इस विषय पर उपलब्ध हैं। यह भी अतिमहत्वपूर्ण तथ्य है कि अनेकों विद्वान भूगोल वेत्ताओं के द्वारा क्रमबद्ध व सुसंगठित अध्ययन के प्रस्तुतीकरण ने राजनीतिक भूगोल को अति विशिष्ट बना दिया। जो उपयोगिता की दृष्टि से

वर्तमान समय में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिसकी विषय वस्तु निरन्तर विस्तार तथा विकासोन्मुख तथा विषय को गतिशील बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

शोधार्थी द्वारा चयनित विषय राजनीतिक भूगोल के एतिहासिक दृष्टिकोण पर आधारित है। अतः शोधार्थी द्वारा विभिन्न विकास के क्रमों को यथाविश्लेषित कर सन्दर्भ सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । शोधार्थी द्वारा मौलिकता तथा शोधपत्र की प्रमाणिकता प्रदान करने हेतु विभिन्न विकास चरणों को चरण बद्ध तथा संहिताबद्ध करने का पूर्ण प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत लेख राजनीतिक भूगोल में एतिहासिक दृष्टिकोण का महत्व : राजनीतिक भूगोल के अध्ययन के सन्दर्भ में। के अन्तर्गत राजनीतिक भूगोल के विकास हेतु एतिहासिक दृष्टिकोण के महत्व को स्पष्ट किया गया है । शोधार्थी द्वारा राजनीतिक भूगोल के प्रथम पंक्ति के विचारकों से लेकर सत्रहवीं शदी में भू–राजनीतिक विचारधारा तत्पश्चात सत्रहवीं और अठारहवीं शदी में महत्वपूर्ण विचारकों को लेख में यथा विश्लेषित किया गया है। लेख अनुरूप राजनीतिक भूगोल के अठारहबी शदी के स्वरूप और योगदान कर्ता विचारकों के विचार तथा महत्वपूर्ण पुस्तकों का यथा विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। लेख के अन्त में महत्वपूर्ण शब्दाबली अनुरूप राजनीतिक भूगोल को प्रमाणिक शब्दाबली के साथ प्रस्तुत करते हुए लेख को महत्व प्रदान करने हेतु विचारकों को एतिहासिक परिवेश में प्रस्तुत किया गया हैं

संदर्भ :–

1. L. Carlson : Geography and Politics, 1958, p-04 .
2. Weigert] H.W. and others : Principles of Political Geography, 1957, P-18 .
3. Cohen, S.B. : Geography and Politics In a Didided world, 1964, P-15.
4. Sukhwal, B.L.- Modern Political Geography of India, Sterling, New delhi. 1985 .
5. डॉ. हरिमोहन सक्सेना : राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पेज नं 21।
6. डॉ. हरिमोहन सक्सेना : राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पेज नं 22।
7. डॉ. हरिमोहन सक्सेना : राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पेज नं 25।

———————————————————————————

डॉ. नेत्रपाल सिंह, रूधऊ, शिकोहाबाद (फिरोजाबाद) |